समय की पुकार – ब्रह्मचर्य

हमारे राष्ट्र का भविष्य हमारी युवा पीढ़ी पर आधारित है किंतु उचित मार्ग-दर्शन के अभाव में यह पीढ़ी गुमराह होती जा रही है। भौतिकवादी सभ्यता के दुष्प्रभाव से उसकी यौवन-शक्ति का ह्रास होता जा रहा है। जीवन के 25 वर्ष तक की आयु संयम और ब्रह्मचर्य संरक्षण की आयु होती है लेकिन आज के इस चकाचौंध भरे युग में 15 से 16 वर्ष की आयु तक 30,000 से भी अधिक दूषित चित्र उसके मन-पटल को छू चुके होते हैं। इतना ही नहीं, सिनेमा के निर्जीव चित्रों को देखकर, युवा उन्हें वास्तविक बनाने की दौड़ में लग जाते हैं। तो ये चलचित्र और टी.वी.चैनल, युवाओं को गुमराह करने में कम नहीं हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जीवन के नैतिक मूल्यों के प्रति जागरुकता नहीं के बराबर है जिसके कारण आज के छात्र-छात्राएँ कुसंस्कारी, विकारी एवं असंयम के शिकार होते जा रहे हैं। साथ-साथ आचार-व्यवहार के अन्धानुकरण से उनमें फैशन, अशुद्ध आहार-विहार की प्रवृत्ति बढ़ रही है जो दिनों-दिन पतन की ओर ले जा रही है। वे निर्बल हैं और नाम-रूप में फंसते रहते हैं। युवाओं की इस हालत से पता चलता है कि ब्रह्मचर्य की महिमा से वे बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। आज शहर के ही नहीं, गाँव में रहने वाले लाखों-करोड़ों छात्र-छात्राएँ भी अज्ञानतावश, नकारात्मक संकल्पों के रूप में 'सृजन शक्ति' को व्यर्थ में बहाकर हीरे-तुल्य जीवन को कौड़ी तुल्य बना, दीनता-हीनता को प्राप्त कर रावण (विकारों) की जंजीरों से बंध जाते हैं और सामाजिक अपयश के भय से, मन ही मन कष्ट भी झेलते रहते हैं। इससे उनका मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य समाप्त हो जाता है। ऐसे युवक-युवतियाँ तरुणावस्था में ही चेहरे पर मुँहासे, धँसे नेत्र, पीला चेहरा, स्मृतिनाश, दुर्बलता, आलस्य, उदासी, हृदय कंप, जोड़ दर्द, विचार शक्ति और मानसिक शक्ति का अभाव, क्रोध की भरपूरता आदि रोगों के शिकार हो जाते हैं। कइयों के तो मस्तिष्क भी कार्य करना बंद कर देते हैं। इन सभी रोगों का विश्व में कोई स्थायी उपचार ही नहीं है। है तो केवल एक स्व द्वारा इलाज – ब्रह्मचर्य।

मेरे प्यारे भाइयो एवं बहनो, भारत को विश्व गुरु के पद पर पुनः आसीन करना है तो सर्वप्रथम 'स्वराज्य अधिकारी' बनो, अपने ऊपर राजाई करना सीखो। ब्रह्मचर्य के द्वारा ही हमारी युवा पीढ़ी अपने व्यक्तित्व का संतुलित एवं श्रेष्ठतम विकास कर सकती है। ब्रह्मचर्य से ही अच्छी रीति विद्याध्ययन कर सकते हैं। साथ-साथ महान् से भी महान् लक्ष्य को पूरा करने के लिए उसके मनोबल में वृद्धि हो जाती है। अपने आप को और परमपिता परमात्मा को पहचानने में भी ब्रह्मचर्य ही मूल आधार है।

औद्योगिक, तकनीकी और आर्थिक क्षेत्र में चाहे कितना भी विकास हो जाए, फिर भी यदि युवाशक्ति की सुरक्षा न हो पाई तो यह भौतिक विकास विनाश का रूप ले लेगा। कोई भी राष्ट्र संयम-सदाचार से ही सुचारु रूप से चल सकता है। राष्ट्र का सर्वांगीण विकास सच्चरित्र एवं संयमी युवक-युवतियों पर आधारित है। आज कोई बच्चा जन्म लेता है तो डॉक्टर, पोलियो से सुरक्षा के लिए उसे

'जिंदगी की एक बूंद' पिलाकर अक्षम होने से बचाते हैं। उसी प्रकार **सुप्रीम सर्जन भी अपने बच्चे-बच्चियों को विकारों रूपी पोलियो से बचाने के लिए 'आत्म-ज्ञान और परमात्म ज्ञान की बूँद' पिलाते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रूपी बेहद के 'रूहानी गुरुकुल' से परम सतगुरु परमात्मा द्वारा ज्ञान की एक बूंद जिस आत्मा को मिल जाती है, उसके जीवन की इच्छा रूपी प्यास बुझ जाती है। जीवनबंध से जीवन्मुक्त हो जाते हैं।** इस गुरुकुल में बुराइयों से सदा सुरक्षित रहने के लिए प्रतिदिन ज्ञान और सहज राजयोग की प्रैक्टिस से नीति और स्वधर्म की शिक्षा प्राप्त होती है जिससे वह त्याग और साधना की कसौटी प्राप्त करता है। उठने से सोने तक एक कर्मठ सिपाही जैसा अनुशासित जीवन जीने लगता है। फलस्वरूप, भोगवादी संस्कृति अर्थात् तड़क-भड़क, काम, क्रोध आदि विषय-विकारों से बच जाता है। आचार-विचार-व्यवहार में शालीनता और दिव्यता झलकने लगती है और इस अमूल्य जीवन के लक्ष्य को जानकर श्रेष्ठ स्वप्नों के महल को ढहने से सदा के लिए बचा लेता है। ❑